B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A)/Unit – 2(d)
Topic – कोर-पाठ्यक्रम (Core Curriculum)
Lecture No. - 75

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

भूमिका (Introduction)

कोर–पाठ्यक्रम वह है जिसमें कुछ विषय अनिवार्य होते है और कुछ विषयों का चुनाव विविध विकल्पों में से किया जाता है। ऐसा पाठ्यक्रम इस बात पर बल देता है कि विद्यालय अधिक सामाजिक दायित्वों को ग्रहण करे एवं कुशल, क्षमतावान एवं कर्तव्यपरायण नागरिकों के निर्माण में सहायक हो। कोर पाठ्यक्रम को अक्सर प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर स्कूलि बोर्ड, शिक्षा विभाग या शिक्षा–कार्य की निगरानी करने वाली किसी अन्य संस्था द्वारा स्थापित किया जाता है।

अमेरिकन शिक्षाशास्त्रीयों ने 1920–1930 के बीच इस प्रकार के पाठ्यक्रम का विकास किया।
कुछ प्रमुख अमेरिकी विद्वानों ने कोर–पाठ्यचर्या पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं –

1. **केसवेल (Casewell)** के अनुसार, "कोर–पाठ्यक्रम, छात्र की महत्वपूर्ण व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं में निहित है।"

2. **स्पीयर्स (Sperars)** के शब्दो में, "कोर–पाठ्यक्रम छात्रों के सामान्य विकास पर केन्द्रित है।"

3. **जेम्स एम. ली (James M. Lee)** के अनुसार, "कोर–पाठ्यक्रम वह है, जो व्यक्तिगत तथा शाश्वत दोनों प्रकार के हितों से संबंधित अंतर–अनुशासनात्मक समस्याओं में केन्द्रित होता है। इसमें विषय–वस्तु को विचाराधीन समस्या के समाधान के लिये आवश्यक होने के नाते सीखने के लिये स्थान प्रदान किया जाता है।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कोर पाठ्यचर्या को अधिक महत्व दिया है। इसके अनुसार हमारा भारतीय समाज अनेक वर्गों, संप्रदायों, जातियों, संस्कृतियों, सभ्यताओं, प्रथाओं, मान्यताओं, भौगोलिक स्थितियों एवं विविध भाषाओं में बंटा हुआ है। इसलिय पाठ्यक्रम का सृजन स्थानीय भाषायी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। कुछ विषय अनिवार्य एवं कुछ क्षेत्रीय या स्थानीय विषय ऐच्छिक विषय के रूप में होने चाहिए जिससे हम अपने भारतीय समाज में कर्तव्यनिष्ठ एवं परिश्रमी व्यक्तियों का निर्माण कर सकें।

कोर पाठ्यक्रम के उद्देश्य
(Objectives of Core-Curriculum)

1. ऐसा पाठ्यक्रम – ऐसा पाठ्यक्रम व्यक्ति के सामाजिक जीवनयापन पर ज़ोर देता है। इसका लक्ष्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जो सामाजिक रूप से कुशल, क्षमतावान, एवं कर्तव्यपरायण हों।

2. शैक्षणिक कार्य के प्रारंभिक दौर में छात्रों को आश्वस्त करना कि उनके बाद के अध्ययन में प्रगति बनाने के लिये अच्छी तैयारी हो रही है। इस अर्थ में मुख्य पाठ्यक्रम आधारभूत होगा।

3. एकीकृत मानदंड स्थापित करना कि विषयों से प्राप्त ज्ञान को विशेष रूप से संबंधित हो। इस अर्थ में पाठ्यक्रम प्रासंगिक होगा।

4. यह कोर विषयों के अध्ययन में अनुक्रमण प्रदान करता है। छात्रों के स्तर के अनुसार यह महत्वपूर्ण विषयों एवं कौशलों के अर्जन में बौद्धिक परिपक्वता का निर्माण करने में सहायक होगा।

कोर-पाठ्यक्रम की विशेषताएँ
(Merits of Core-Curriculum)

1. इसमें शिक्षण समस्या केन्द्रित होता है। अतः छात्रों को समस्याओं को हल करने का अनुभव प्राप्त होता है।

2. इसमें विषयों के पारंपरिक खण्ड समाप्त कर दिये जाते है एवं कई वषयों को एक साथ मिलाकर पढ़ाया जाता है।

3. इस प्रकार का पाठ्यक्रम सभी छात्रों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति की चेष्टा करता है।

4. इसमें छात्रों एवं शिक्षकों के संबंध अधिक घनिष्ठ होते हैं एवं अध्ययन –अध्यापन के साथ–साथ परामर्श भी चलता है।

5. ऐसा पाठ्यक्रम बाल–केन्द्रित एवं मनोवैज्ञानिक होता है।

6. सभी विषयों के अध्यापन का समय निश्चत होता है।

(समाप्त)